eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

जनसंख्या नियंत्रण में परिवार नियोजन के साधनों के प्रभाव – एक तुलनात्मक समाजशास्त्रीय अध्ययन (जनपद अल्मोड़ा के विशेष सन्दर्भ में)

[1]लता
[2]अभिमन्यु कुमार
[1]शोधार्थिनी, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रानीखेत, अल्मोडा, उत्तराखण्ड
[2]शोधनिर्देशक, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रानीखेत, अल्मोडा, उत्तराखण्ड

Received: 10 Jan 2022, Accepted: 20 Jan 2022, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2022

Abstract

जनसंख्या वृद्धि दर को नियन्त्रण करने में परिवार नियोजन एक महत्वपूर्ण साधन है। परिवार नियोजन का अर्थ है कि परिवार को एक स्तर तक ही बढ़ाया जाए ताकि परिवार की आमदनी को ध्यान रखते हुए जीवन स्तर को ऊँचा किया जा सके, "परिवार को अपनी इच्छानुसार जानबूझकर सीमित करना, उचित समय बाद संतान पैदा करना ही परिवार नियोजन है," जिसके लिए अनेक उपाय किये हैं जैसे– गर्भनिरोधक गोलियाँ, नसबंदी, गर्भनिरोधक इंजेक्शन, कॉपर टी आदि का प्रयोग, प्रस्तुत अध्ययन में अन्वेशनात्मक शोध प्राविधि का प्रयोग किया गया है। आकड़ो को एकत्रित करने के लिए निर्दर्शन की दैव निर्दर्शन विधि का प्रयोग किया गया है।

Keywords:- परिवार नियोजन की तकनीकिया, जाति, जनसंख्या वृद्धि, ग्रामीण, नगरीय उत्तरदाता।

प्रस्तावना

परिवार नियोजन की तकनीकी यह तय करती है कि आपकी सन्तान कब हों? जब आप सन्तान के लिए थोड़ी प्रतीक्षा करना चाहते हैं, तो कोई भी उपलब्ध तकनीकी में से एक तकनीकी चुन सकते हैं। इन तकनीकों को परिवार नियोजन तकनीकों, बच्चे के बीच अंतर रखने के तकनीकी और गर्भ निरोधक तकनीकी कहते हैंद्य प्रति वर्ष लगभग 5 लाख महिलाएँ गर्भधारण, प्रसव और असुरक्षित गर्भपात की समस्याओं के कारण मृत्यु की शिकार हो जाती हैं इन कई मौतों को परिवार नियोजन तकनीकों के द्वारा कम किया जा सकता है या अधिक जल्दी 18 वर्ष से कम आयु की लड़कियों की प्रसव के समय मरने की संभावना अधिक रहती हैं क्योंकि उनका शरीर पूरी तरह से अल्पविकसित होता है, जिससे उनके जन्म हुए बच्चे की भी पहले वर्ष में ही मृत्यु हो जाने की संभावना अधिक

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

रहती है, तथा अधिक देर से गर्भधारण एवं अधिक आयु की महिलाओं को अधिक खतरा रहता है क्योंकि अनेक महिलाओं में स्वास्थ्य सम्बन्धी होती है या वे पहले से ही कई बच्चों को जन्म दे चुकी होती है। ऐसी अवस्था में महिला के शरीर को गर्भधारण के प्रभावों से उबरने के लिए समय चाहिए। अत्यधिक 3 से 4 बच्चे पैदा करने वाली महिलाओं को प्रसव के बाद एनीमिया होने व अन्य कारणों से मृत्यु का जोखिम होने की भी संभावना आधिक होती है, अगर महिला के बच्चों की संख्या और उनके जन्म होने के समय में नियंत्रण है, तो वह अधिक स्वस्थ रहेंगी और वे माताएँ व बच्चे भी अधिक स्वस्थ रहेगें जिससे जोखिम पूर्ण गर्भो की रोकथाम हो सकती है, क्योंकि बच्चों की कम संख्या का अर्थ है । प्रत्येक बच्चे के लिए अधिक भोजन, बच्चों के जन्म को टालकर युवा महिलाओं व पुरुषों को अपनी शिक्षा पूरी करने और अपना भविष्य सुदृढ़ करने का अवसर अधिक मिलता है। और अगर बच्चे कम है तो पति–पत्नी एक दूसरे व बच्चों के साथ अधिक समय गुजार सकते हैं।1

साहित्य सर्वेक्षणः – किंनिग और खान एमई (1999) ने अपने अध्ययन में कहा है कि भारत में परिवार कार्यक्रमों में उपलब्ध कराई जाने वाली सेवाओं की गुणवत्ता पर किए गए अध्ययनों के एक संकलन की प्रस्तावना में बताया कि किस प्रकार यह कार्यक्रम "संस्थाओं पर अत्यधिक जोर देता है" विशेषकर नसबंदी वाली गर्भनिरोधक को अपनाने वाले लोग पर यह कार्यक्रम का लक्ष्य आधारित है जो सेवा प्रदाता ता लक्ष्यों पर जोर दे हुए, सेवाओं की गुणवत्ता पर बहुत कम ध्यान देते हैं। इस संकलन में शामिल अध्ययन सेवाओं की मूलभूत ढांचे तथा उपकरणों की खराब गुणवत्ता पर प्रक्रिया मेंविकल्प उपलब्ध न होने, व और किसी गैर हाजरी संक्रमण रोकने की कोई प्रयास न किए जाने तथा महिला को कब कैसे गर्भ निरोधको का उपयोग करना चाहिए, उसके विषय में सेवा प्रदान निर्दिष्ट निर्णय प्रक्रिया के सबूत है।2

देवपुरी सी, फिलिप्स जेएफ जैकसन (2002) के अध्ययन के अनुसार समुदाय संगठन की रणनीति के हिस्से के रूप में संतुष्ट गर्भनिरोधक उपयोगकर्ताओं के "माँ क्लब" को बढ़ावा देने के लिए एक मामूली निवेश किया गया था । योजना में गर्भनिरोधक सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार के लिए समुदाय संगठन को एक प्रमुख रणनीति के रूप में इस्तेमाल किया । योजना के स्वास्थ्य व परिवार नियोजन की जानकारी का प्रसार वह गर्भनिरोधको की आपूर्ति के विवरण के लिए पुरुषों को पारंपरिक बैठको जो केवल पुरुषों के लिए थी, परियोजना ने इसमें महिलाओं के समर्थन की और दोनों संकेतको के रूप में इस्तेमाल कार्यक्रमों को प्रभाव किया गया है।3

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

रामा राव एस (2003) का कहना है कि ग्राहकों को मिलने वाली परिवार नियोजन सेवाओं की गुणवत्ता की धारणा के से लगातार गर्भनिरोधक इस्तेमाल करने के साथ संबंध की जांच की गई । देखभाल की गुणवत्ता का मूल्यांकन 5 आयामों की प्रतिनिधित्व करने वाले 24 संकेतों के उपयोग द्वारा किया गया । अध्ययन में पाया गया है कि गर्भनिरोधक अपनाने के बाद 16 महीने तक गर्भ निरोधक इस्तेमाल जारी रखना महत्वपूर्ण रूप से देखभाल की गुणवत्ता के साथ जुड़ा हुआ है। गुणवत्ता देखभाल कम माध्यम तथा उच्च बताने वाली महिलाओं में इस्तेमाल जारी रखने की संभावना क्रमशः 55 प्रतिशत, 62 प्रतिशत, व 67 प्रतिशत है ।4

उद्देश्य – प्रस्तुत शोध पत्र में यह जानने का प्रयास किया गया है कि परिवार नियोजन के साधनों के प्रयोग में उत्तरदाताओं की जातियोँ पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

- अध्ययन क्षेत्र– प्रस्तुत शोध अध्ययन जनपद अल्मोड़ा के दो विकासखण्डों के ग्रामीण एंव नगरीय क्षेत्रों के उत्तरदाताओं का चुनाव किया गया है।जिसमें से ग्रामीण क्षेत्र के 150 और नगरीय क्षेत्र के 150 महिला 18–49 आयु समूह के उत्तरदाताओं का चयन समानुपाती दैव निदर्शन पद्धति के द्वारा किया गया है।
- अध्ययन प्रविधि – शोध अध्ययन में अन्वेषणात्मक तथा वर्णनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है आकड़ों को एकत्रित करने के लिए साक्षात्कार अनुसूची तथा अवलोकन प्रविधि का प्रयोग किया गया है।आकड़ो को विश्लेषण के लिए ग्रामीण तथा नगरीय उत्तरदाताओं की तुलना करने के लिए काई साधारण प्रतिशत का प्रयोग किया गया है तथा शोध पत्र को आकर्षित बनाने के लिए आकड़ो को आरेख के द्वारा प्रस्तुत किया है ।

जाति के आधार पर महिला उत्तरदाताओं द्वारा परिवार नियोजन विधियों के प्रयोग का तुलनात्मक अध्ययन

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

	ग्रामीण क्षेत्र				नगरीय क्षेत्र			
	सामान्य जाति	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जन जाति	अन्य पिछड़ी जाति	सामान्य जाति	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जन जाति	अन्य पिछड़ी जाति
गर्भ निरोधक गोलियाँ	02 (3.70)	06 (11.75)	-	-	04 (5.26)	02 (6.25)	-	02 (16.66)
कॉपर टी	11 (20.37)	12 (23.52)	-	-	15 (19.73)	08 (25.00)	-	04 (33.33)
गर्भ निरोधक इंजेक्शन	14 (25.92)	-	-	-	02 (2.63)	-	-	-
नसबंदी	13 (20.07)	10 (19.60)	-	03 (42.85)	17 (22.36)	06 (18.75)	-	-
किसी भी गर्भ निरोधक विधि का प्रयोग न करना	14 (25.92)	23 (45.09)	02 (100.00)	07 (70.00)	38 (50.00)	16 (50.00)	02 (100.00)	06 (50.00)
कुल योग	**54**	**51**	**02**	**10**	**76**	**32**	**02**	**12**

उत्तरदाताओं द्वारा प्रयोग की जाने वाली परिवार नियोजन विधियाँ

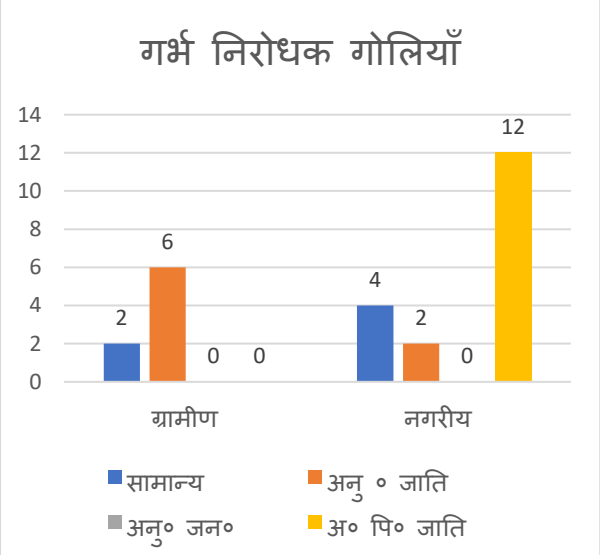

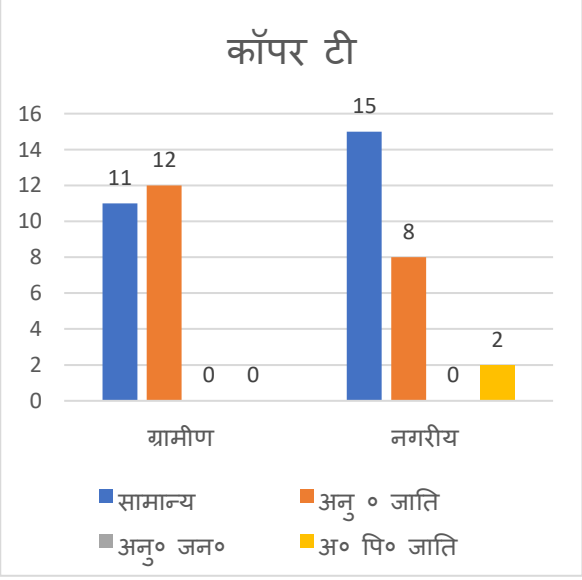

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

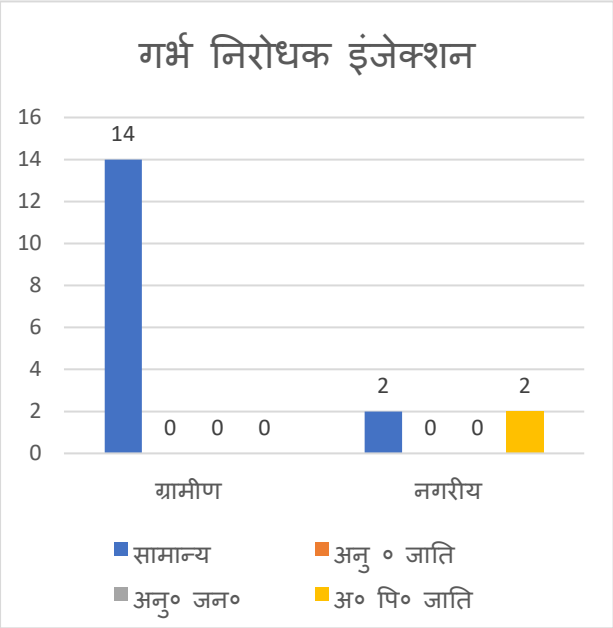

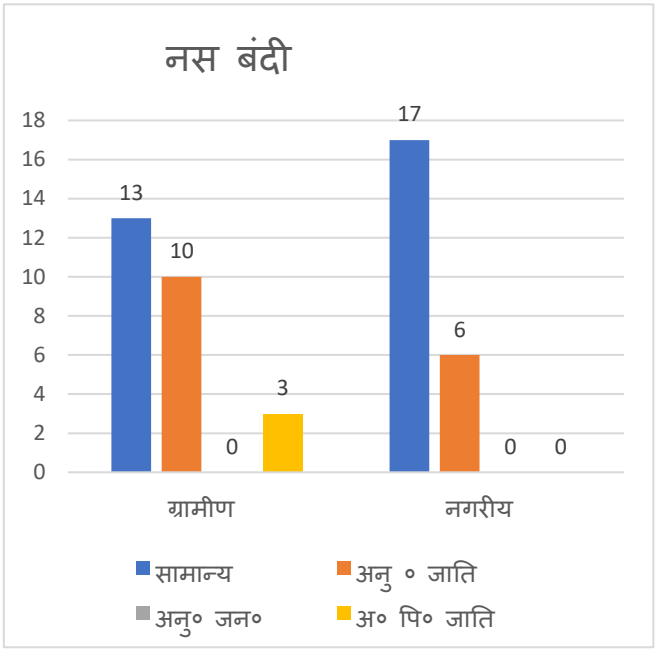

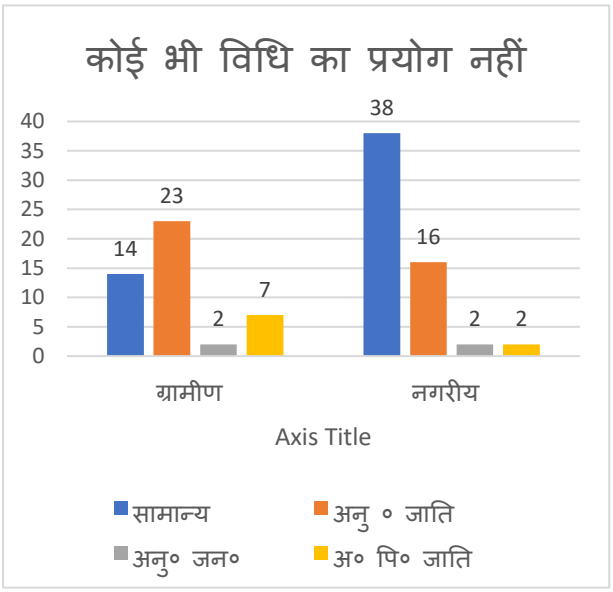

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों के उत्तरदाताओं तथा नगरीय क्षेत्रों के उत्तरदाताओं के द्वारा परिवार नियोजन की विधियों का प्रयोग किया गया है, सारणी में ग्रामीण क्षेत्र के उत्तरदाताओं को 4 भागों में विभाजित किया गया, जिसमें सामान्य जाति, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ी जाति, इसी प्रकार नगरी क्षेत्र के उत्तरदाताओं को भी 4 जातियों में विभाजित किया गया है, जिसमें सामान्य जाति, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़ी जातियाँ को

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

शोध में सम्मिलित किया गया हैद्य ग्रामीण एवं नगरी उत्तरदाताओं के सर्वेक्षण को सरल बनाने के लिए और यह जानने के लिए कि वे परिवार नियोजन की तकनीकों का प्रयोग कितनी संख्या में कर रहे हैं, या नहीं, इन परिवार नियोजन तकनीकी को सारणी के आधार पर अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों के सामान्य जाति के उत्तरदाता की संख्या 54 है, जिसमें से 2 (3.70) प्रतिशत उत्तरदाता गर्भनिरोधक गोलियों, 11 (20.37) प्रतिशत उत्तरदाता कॉपर टी, 14 (25.92) प्रतिशत गर्भनिरोधक इंजेक्शन, 13 (20.07) प्रतिशत उत्तरदाता नसबंदी का प्रयोग करते है जबकि 14 (25.92) प्रतिशत उत्तरदाता किसी भी गर्भनिरोधक विधियों का प्रयोग नहीं करते हैंद्य इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्र में कुल अनुसूचित जाति के 51 उत्तरदाताओं, में से 6 (11.76) प्रतिशत उत्तरदाता गर्भनिरोधक गोलियाँ, 12 (23.52) प्रतिशत उत्तरदाता कॉपर टी, शून्य उत्तरदाता गर्भनिरोधक इंजेक्शन, 10 (19.60) प्रतिशत उत्तरदाता नसबन्दी का प्रयोग करते है, जबकि 23 (45.09) प्रतिशत उत्तरदाता किसी भी प्रकार की गर्भनिरोधक तकनीकों का प्रयोग नहीं करते हैं।

यदि अनुसूचित जनजाति में कुल उत्तरदाताओं की संख्या पर दृष्टि डालें तो इनमें 2 (100.00) प्रतिशत उत्तरदाताओं में से दोनों उत्तरदाता किसी भी गर्भनिरोधक विधि का प्रयोग नहीं करते ,अब अन्य पिछड़ी जाति के उत्तरदाताओं का सारणी में अवलोकन करने पर इनकी कुल संख्या 10 (7. 70)प्रतिशत उत्तरदाता में से 3 (42.85) प्रतिशत उत्तरदाता नसबंदी का प्रयोग करते हैं, तथा 7 (70. 00) प्रतिशत उत्तरदाता किसी भी गर्भनिरोधक तकनीकों का प्रयोग नहीं करते, जबकि नगरीय क्षेत्र के सामान्य जाति के उत्तरदाताओं की कुल संख्या 76 का अवलोकन करें तो यह देखते हैं कि 4 (5.26) प्रतिशत उत्तरदाता गर्भनिरोधक गोलियाँ 15 (19.73) प्रतिशत उत्तरदाता कॉपर टी, 2 (2.63) प्रतिशत उत्तरदाता गर्भनिरोधक इंजेक्शन, 17 (22.36) प्रतिशत उत्तरदाता नसबंदी का प्रयोग करते है। जबकि 38 (50.00) प्रतिशत उत्तरदाता किसी भी गर्भनिरोधक तकनीकों का प्रयोग नहीं करतेद्य इसी प्रकार नगरीय क्षेत्र के अनुसूचित जाति के कुल 32 उत्तरदाताओं में से 2 (6.25) प्रतिशत उत्तरदाता गर्भनिरोधक गोलियाँ, 8 (25.00) प्रतिशत उत्तरदाता कॉपर टी, शून्य उत्तरदाता गर्भनिरोधक इंजेक्शन 6 (18.75 प्रतिशत) उत्तरदाता नसबंदी का प्रयोग करते है। एवं 16 (50.00) प्रतिशत उत्तरदाता किसी भी गर्भनिरोधक विधियों का प्रयोग नहीं करते हैंद्य यदि नगरीय क्षेत्र केअनुसूचित जन जाति के कुल 2 (100.00) प्रतिशत उत्तरदाताओं पर दृष्टि डालें तो सारणी में यह देखा गया कि दोनों उत्तरदाता किसी भी गर्भनिरोधक विधि का प्रयोग नहीं करते। अब नगरी क्षेत्र के अन्य पिछड़ी जाति के कुल 12 उत्तरदाताओं में से 2 (16.66) प्रतिशत उत्तरदाता गर्भनिरोधक गोलियाँ 4 (33.33) प्रतिशत उत्तरदाता

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

कॉपर टी, शून्य उत्तरदाता गर्भनिरोधक इंजेक्शन, शून्य उत्तरदाता नसबंदी का प्रयोग करते हैद्य एवं 6 (50.00) प्रतिशत उत्तरदाता किसी भी गर्भनिरोधक तकनीकों का प्रयोग नहीं करते हैं।

उपरोक्त सारणी के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के उत्तरदातों की अपेक्षा नगरीय क्षेत्र के उत्तरदाताओं द्वारा गर्भ निरोधक गोलियों का प्रयोग अधिक किया जा रहा है। इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्र के अनुसूचित जाति के उत्तरदाता गर्भनिरोधक गोलियों का प्रयोग नगरी क्षेत्र की अनुसूचित जाति के उत्तरदाताओं की अपेक्षा अधिक किया जा रहा है, अब ग्रामीण क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति के उत्तरदाता एवं नगरीय क्षेत्र के अनुसूचित जनजाति के उत्तरदाताओं का सापेक्ष अध्ययन करने पर यह पाया गया कि कोई उत्तरदाता गर्भनिरोधक गोलियों का प्रयोग नहीं कर रहा है। इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्र के अन्य पिछड़ी जाति के उत्तरदाताओं एवं नगरीय क्षेत्र के अन्य पिछड़ी जाति के उत्तरदाताओं का सपेक्षित अध्ययन करने पर यह पाया गया कि केवल नगरी क्षेत्र के अन्य पिछड़ी जाति के उत्तरदाता ही गर्भनिरोधक गोलियों का प्रयोग कर रहे हैं इसी प्रकार नगरी क्षेत्र के सामान्य जाति के कुल उत्तरदाताओं की संख्या के सापेक्ष ग्रामीण क्षेत्र के कुल सामान्य जाति के उत्तरदाताओं द्वारा परिवार नियोजन की विधियों में से कॉपर टी का प्रयोग अधिक करते हैं। तथा ग्रामीण क्षेत्र के अनुसूचित जाति के उत्तरदाताओं के सापेक्ष नगरीय क्षेत्र के अनुसूचित जन जाति के उत्तरदाताओं द्वारा कॉपर टी का प्रयोग अधिक किया गया एंव ग्रामीण क्षेत्र में अन्य पिछड़ी जाति के उत्तरदाताओं के सापेक्ष नगरीय क्षेत्र के अन्य पिछड़ी जाति के उत्तरदाता कॉपर टी का प्रयोग कर रहें है। ठीक इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्र के सामान्य जाति के उत्तरदाता नगरीय क्षेत्र के सामान्य जाति के उत्तरदाताओं के सापेक्ष गर्भ निरोधक इजेक्शन प्रयोग अधिक कर रहें एवं ग्रामीण क्षेत्र के अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन जाति तथा अन्य पिछड़ी जाति के उत्तरदाता नगरीय क्षेत्र के अनुसूचित जाति, अनुसूचित जन जाति तथा अन्य पिछड़ी जाति के उत्तरदाता गर्भ निरोधक इजेक्शन का प्रयोग नहीं कर रहें है। शोध सारणी के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि नगरीय क्षेत्र के सामान्य जाति के उत्तरदाता ग्रामीण क्षेत्र के उत्तरदाता के सापेक्ष नसबन्दी गर्भनिरोधक तकनीकों का प्रयोग अधिक मात्रा में करते है, जबकि ग्रामीण क्षेत्र के अनुसूचित जाति के उत्तरदाता नगरीय क्षेत्र के अनुसूचित जाति के सापेक्ष नसबन्दी गर्भनिरोधक तकनीक का प्रयोग अधिक मात्रा में करते है एवं ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्र के अनुसूचित जन जाति के उत्तरदाता इस तकनीक का प्रयोग नहीं कर रहें है। इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्र के अन्य पिछड़ी जाति के उत्तरदाताओं के सापेक्ष नसबन्दी गर्भनिरोधक तकनीकी का प्रयोग करते है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

अतः शोध द्वारा यह पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्र के कुल उत्तरदाता एवं नगरीय क्षेत्र के कुल उत्तरदाताओं में से कुछ ऐसे भी उत्तरदाता पाये गये जो किसी भी गर्भनिरोधक तकनीकी का प्रयोग नहीं करते यदि इनके सापेक्ष विश्लेषण करने के उपरान्त यह देखा गया कि नगरीय क्षेत्र के उत्तरदाता ग्रामीण क्षेत्र के उत्तरदाताओं के सापेक्ष गर्भ निरोधक तकनीकों का प्रयोग नहीं कर रहें है।

निष्कर्ष : परिवार नियोजन मुख्य रूप भारत जैसे देशों के लिए अति आवश्यक है ताकि वे अपनी आबादी के विकास को नियंत्रित कर सकेद्य जिसमें सभी के लिए पर्याप्त संसाधन प्राप्त हो जाये । परिवार नियोजन तकनीकों की आवश्यकता व्यक्तिगत और विश्वव्यापी दोनों स्तरों पर होती हैं। प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्ता ने जनसंख्या नियन्त्रण में परिवार नियोजन की भूमिका का मूल्याँकन उत्तरदाताओं की जाति के आधार पर किया हैद्य जिसका विश्लेषण तालिका द्वारा दर्शाया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. डॉ नरेंद्र पाल सिंह और प्रवीण कुमार,कुरुक्षेत्र, "भारतीय समाज की जनसांख्यिकी की संरचना" जुलाई 2005 पृष्ठ संख्या–3

2. किंनिग और खान एमई भारत के परिवार में देखभाल की गुणवत्ता में सुधार योजना कार्यक्रम जनसंख्या परिषद 1999 अध्याय–1

3. देवपुरी सी, फिलिप्स जेएफ जैकसन, नवरंगोपरियोजना का प्रभाव गर्भनिरोधक घुड़ी पर और उपयोग, प्रजनन प्राथमिकताएं, और प्रजनन क्षमता 2002; (3) पृष्ठ संख्या– 441–164।

4. रामा राव एस, कोस्टोलो, पैगोलीबाय बी , जॉन एच, देखभाल की गुणवत्ता और के बीच लिंक गर्भनिरोधक का उपयोग अंतरराष्ट्रीय परिवार नियोजन के दृष्टिकोण 2003(2); पृष्ठ संख्या–76–82।

5. रामा राव एस, कोस्टोलो, पैगोलीबाय बी , जॉन एच, देखभाल की गुणवत्ता और के बीच लिंक गर्भनिरोधक का उपयोग अंतरराष्ट्रीय परिवार नियोजन के दृष्टिकोण 2004(2); पृष्ठ संख्या–76–82